मैथिलीशरण गुप्त की काव्यगत देशभक्ति एवं नारी भावना

Maithilisharan Gupt Ki Kavyagat Deshbhakti Evam Nari Bhavana

***Dr.Manjushree Menon, Associate Professor of Hindi, M.E.S.College of Arts, Commerce and Science, Bangalore.**

भूमिका:-

मैथिलीशरण गुप्त जी द्विवेदी युग के कवियों में उच्च स्थान रखते हैं। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीयता समाज सुधार युग बोध के साथ-साथ भारतीय संस्कृति एवं नारी का भी चित्रण हुआ है। गुप्त जी ने अपने महाकाव्य साकेत में विरहिणी उर्मिला, ममतामयी माँ कैकेयी का तथा यशोधरा खण्डकाव्य में यशोधरा तथा विष्णुप्रिय में नायिका का चित्रण अद्भूत ढंग से किया है।

इन्होने नारी सम्बन्धों विचारों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि गुप्त जी ने नारी के सम्पूर्ण जीवन को जिन दो पंक्तियों में बाँटा है वे नारी की भावना को व्यक्त करती है। गुप्तजी राष्ट्र प्रेमी कवि हैं । इनकी रचनाओं मे राष्ट्रप्रेम कूट-कूट कर भरा पड़ा है । इनकी राष्ट्रीयता महात्मा गांधी से प्रभावित है । भारत - भारती ,साकेत आदि काव्यों मे इनकी राष्ट्रीयता के स्वर पूर्णतः मुखर हुए है । साकेत मे महात्मा गाँधी से प्रभावित असहयोग आंदोलन ,सत्याग्रह ,अनशन आदि के चित्र मिले हैं ।

नारी चेतना

गुप्त जी नारी के सम्बन्ध में कहते हैं कि

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में दूध है और आँखों में पानी।।

गुप्त जी नारी के इस अक्षमता पर दुःख प्रकट करते है साथ ही वे नारी को पुरुष से श्रेष्ठ भी मानते है। वे उसे पुरुष से अत्यधिक सहनशील मानते हैं। वे नारी को श्रेष्ठ मानते हुए कहते हैं कि

एक नहीं दो दो मात्राएँ नर से भारी नारी।।

गुप्त जी नारी पर लगाए गए बन्धनों का विरोध करते हैं। गुप्त के अत्याचार, शोषण का शिकार नारी की स्थिति अत्यधिक दयनीय है। पुरुष उस पर विश्वास नहीं करता ये विडम्बना ही है कि पुरुष के तो दोष क्षम्य है परन्तु नारी का एक भी दोष क्षम्य नहीं होता और वह अत्याचार व शोषण का शिकार होती है।

अधिकारों के दुरूपयोग,
कौन कहाँ अधिकारी।
कुछ भी स्वत्व नहीं रखती क्या, अर्धांगिनी तुम्हारी।।

नारी पर विश्वास करने वाला यह पुरुष भी तो नारी की ही कोख से पैदा हुआ है। जन्मदात्री होकर भी उसे अपशब्द कहना, अत्याचार करना, क्रूरता दिखाना क्या उचित है ? गुप्त जी कहते है कि

उपजा किन्तु अविश्वासी नर हाय! तुझी से नारी।
जाया होकर जननी भी है तू ही पाप-पिटारी।।

गुप्त जी ने नारी के विविध रूपों का भी चित्रण किया है। बेटी से बहू, माँ, गृहिणी, प्रिया कहीं पति के वियोग को सहने वाली, तो कहीं पति की मृत्यु पर विधवा, कहीं वीरांगना के रूप में है। कहीं नारी समाजसेविका के रूप में समाज की सेवा कर रही है।

साकेत में उर्मिला अपने पति लक्ष्मण के मार्ग में बाधा नहीं बनती। वह अपने प्रिय पति को वन जाने देती। गुप्त कृत यशोधरा में भी नायिका को अपने प्रिय से यही शिकायत होती है कि वे मुझे बताकर जाते। यदि वे मुझे बताकर जाते तो मुझे आत्मसन्तोष होता। अपनी व्यथा को इस प्रकार कहती है –

सखि वे मुझसे कहकर जाते।
सिद्धि हेतु स्वामी गए यह गौरव की बात।
पर चोरी-चोरी गए यही बड़ी व्याघात।।

चित्रकूट में सीता अपनी कुटिया को ही राजमहल मानती है औश्र पति के साथ अपने आप को बड़ी सौभाग्यवती समझती है। इस प्रकार गुपत जी ने सीता को आदर्श नारी के रूप में चित्रित किया है। गुप्त जी नारी का स्वाभिमानी रूप भी चित्रित किया है।

उर्मिला को अपने रूप का दर्प है। वह कामदेव को फटकार लगाती है और उसे अपने सिन्दूर बिन्दु की ओर देखने की चुनौती देती हुई है कि यह शंकर जी के अग्नि नेत्र की भाँति उसे भस्म कर देगा। 'यशोधरा' में भी गौतम बुद्ध जब वन से लौटते है तो वे उनसे मिलने नहीं जाती। बुद्ध स्वयं उनसे मिलने जाते है। गुप्त जी कहते हैं कि -

मानिनी मान तजो लो रही तुम्हारी बान।
दानिनी आए स्वयं द्वार पर यह भव तत्र भवान्।।

गुप्त जी ने नारी को गौरवपूर्ण स्थान दिया है। उन्होंने अपने काव्य में उसके गौरवपूर्ण रूपों को उकेरा है। गुप्त जी की नारी भावना उदात्त भाव की है। वे नारी को आदर्श रूप में स्थापित करते है।

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं
वह हृदय नहीं है पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ।।

राष्ट्रीय जागरण

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की यह कविता आज भी देश के प्रति स्वाभिमान जगाने के लिए काफी है । देश में एकता की मांग समय-समय पर उठती रही है । वर्तमान में भी देश की संस्कृति अनेकता में एकता को फिर से स्थापित

करने की मांग जोर पकड़ रही है । ऐसे में हमें राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की बरबस याद आती है । जिनका साहित्य देश प्रेम और उसके प्रति स्वाभिमान से भरा है ।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त हिन्दी साहित्य के इतिहास में खड़ी बोली के प्रथम महत्त्वपूर्ण कवि हैं। उनकी जयन्ती 3 अगस्त को हर वर्ष 'कवि दिवस' के रूप में मनायी जाती है। साहित्य जगत में 'दद्दा' कहे जाने वाले मैथिलीशरण गुप्त के 'राष्ट्रकवि' होने का महत्वपूर्ण कारण है। उनकी राष्ट्रवाद की भावनाएं तथा उनकी कविताएं।

सन् 1912 में स्वतंत्रता आंदोलन के समय गुप्त जी की कृति भारत-भारती ने खूब यश प्राप्त किया जिससे प्रभावित होकर गांधी जी ने उन्हे 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से अलंकृत किया। गुप्त जी का जीवन राष्ट्रवाद व गांधीवाद से प्रभावित था। वर्तमान समय में भी उनके शब्दों की प्रासंगिकता व महत्व उतना ही अधिक है जितना कि तब था।

भारत भारती की रचना

एक तरह से गुप्त जी की भारत भारती की रचना के समय जो समझ बनी समाज की, देश की, समाज सुधार की, राष्ट्रीय चेतना की – वह समझ यही थी कि जातिमूलक सुधारों से देश का गौरव वापिस लाया जा सकता है, पहले से स्थापित समाज व्यवस्था के अनुरूप आदर्शों को अपनाकर सभी का भला हो सकता है। इस प्रकार भारत भारती में गुप्त जी देश के अतीत का एक स्वर्णिम ढाँचा, एक. व्यवस्था की जो परिकल्पना करते हैं, जातीय एकता की एक पहचान का जो वास्ता देते हैं, आर्य सभ्यता, आर्य जाति का जो गौरवशाली इतिहास बुनते हैं, उसे फुटनोट में दिये उदाहरणों से और पुष्ट करके मानों उस पर तथ्यों की मुहर भी लगाते चलते हैं।

आज के समय में सैकड़ों विविधताएं होते हुए भी जो एक शब्द हम सब को जोड़े रखता है वह है भारतीयता। विभिन्न तथ्यों को लेकर वर्तमान समाज में व्याप्त विरोधाभास को दूर करने के लिए भारतीयता के लिए हमें गुप्त जी कविताओं से प्रेरणा लेनी चाहिए।मैथिलीशरण गुप्त जी ने भारत के युवाओं को जागृत करने के लिए लिखा है कि -

हाँ, लेखनी ! हृत्पत्र पर लिखनी तुझे है यह कथा,
दृक्कालिमा में डूबकर तैयार होकर सर्वथा
स्वच्छन्दता से कर तुझे करने पड़ें प्रस्ताव जो,
जग जायँ तेरी नोंक से सोये हुए हों भाव जो।

हरा-भरा यह देश बना कर विधि ने रवि का मुकुट दिया...
मस्तक ऊँचा हुआ मही का, धन्य हिमालय का उत्कर्ष।
हरि का क्रीड़ा-क्षेत्र हमारा, भूमि-भाग्य-सा भारतवर्ष॥

राष्ट्रीय चेतना की यह परम्परा गुप्त जी को भारतेन्दु युग से मिली। किंतु भारतेन्दु युग की राष्ट्रीय चेतना और गुप्त जी की राष्ट्रीय चेतना में अंतर है, परिस्थितियों में भी अंतर हैं। गुप्त जी के समय में अंग्रेज़ों का चरित्र पूरी तरह खुल कर सामने आ गया था। उनसे सामना करने के लिए राजनीतिक स्तर पर कांग्रेस की स्थापना हो चुकी थी। राजभक्ति का भारतेन्दु युग वाला द्वंद्व यहाँ नहीं था। इसलिए गुप्त जी की कविताओं में राष्ट्रीय नवजागरण के स्वर ज्यादा विकसित, ज्यादा उग्र एवं आक्रामक रूप से दिखाई पड़ते हैं। महाभारत के प्रसंगों वाले चित्रों पर कविता

पंक्तियाँ लिखते हुए अपने अतीत, अपनी संस्कृति, अपना इतिहास और अपने गौरव का महाभाव उनकी रचनाओं का आधार बन जाता है। राष्ट्रीय नवजागरण के लिए वे अतीत की इसी मिथकीय दुनिया को संस्कारों से, सामूहिक स्वप्नों से निकाल कर वर्तमान में प्रक्षेपित करते हैं। भारत भारती इस दृष्टि से उनकी बहुत लोकप्रिय एवं चर्चित रचना रही है।

खण्ड काव्य के रूप में इस रचना की प्रेरणा चाहे उन्हें हाली के मुसद्दस से मिली किंतु सन् 1912 **में प्रकाशित इस रचना में राष्ट्र के प्रति उनकी संवेदना बहुत मुखर होकर सामने आती है। भारत भारती में अतीत, वर्तमान एवं भविष्य तीन खंड हैं, जिनमें अतीत खण्ड में गुप्त जी ने बहुत विस्तार से भारत के अतीत का वर्णन कर देशवासियों को अपने स्वर्णिम इतिहास, जातीय पहचान का परिचय देकर उन्हें इज्ज़त और सम्मान से खड़े होने की प्रेरणा देने का कार्य किया है।**

निष्कर्ष :

राष्ट्रीय नवजागरण को व्यापक रूप से साहित्य की अन्तर्वस्तु बना कर द्विवेदी युग में मैथिलीशरण गुप्त ने देश की जनता के साथ साहित्य का व्यापक संबंध स्थापित किया। सबसे पहले उन्होंने 'भारतभारती' के माध्यम से इस देश की पहचान का मूल सूत्र सामने रखा और सहअस्तित्व, सांझी विरासत के वचन को दुहराया। इसके साथ ही अपने वैष्णवी संस्कारों, वर्णाश्रम धर्म की मान्यताओं के बावजूद अपने स्वधर्म की स्वस्थ मान्यताओं को ही उन्होंने अपनी वैचारिक भूमि का आधार बनाकर साहित्य कर्म किया। हिंदू धर्म के साथ-साथ मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई अन्य सभी धर्मों, धर्मावलम्बियों, धर्म गुरुओं के प्रति एक समान आदर और सम्मान का भाव व्यक्त किया, उन पर रचनाएँ कीं।

दूसरी बड़ी उपलब्धि मैथिलीशरण गुप्त के काव्य की है उनकी स्त्रियों के प्रति भावना। उन्होंने इतिहास में से उपेक्षित स्त्री पात्रों को ले कर उनके प्रति संवेदना प्रकट करते हुए उन्हें ही साहित्य में पुनर्जीवित किया। उर्मिला, यशोधरा, जैनी, हिडिम्बा आदि के जीवन चित्रण के माध्यम से उन्होंने नारी विषयक दृष्टिकोण को बदलने पर बल दिया, राष्ट्रीय आंदोलन में उनकी सक्रिय भूमिका पर बल दिया।

संदर्भ ग्रंथ:-

- उर्मिला, मैथिलीशरण गुप्त, भारतीय साहित्य इंक, २०१५
- पंचवटी, मैथिलीशरण गुप्त, भारतीय साहित्य इंक, २००५
- भारत-भारती, 'वर्तमान' खंड, मैथिलीशरण गुप्त, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, २०२०
- साकेत, मैथिलीशरण गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, नयी दिल्ली, २००५